Q एक राष्ट्रीय शासक के रूप मे अकबर का मूल्यांकन करें?

डा० आर० सी० मजूमदार – अकबर की राष्ट्रीय सम्राट के रूप में प्रशंसा करते हुए लिखते है, "अकबर का सार्वभौमिक सहिष्णुता का विचार वास्तव में श्रेष्ठ था तथा उसके राष्ट्रीय आदर्शवाद का उज्ज्वल प्रमाण है."

वास्तव में सभी इतिहासकार अकबर के कार्यों, नीतियों तथा सुधारों के प्रशंसक हैं, कायल है. जहाँ बाबर, हुमायूँ तथा कुछ हद तक शेरशाह ने भी केवल अपने साम्राज्य विस्तार की चिन्ता की और अपने राज्य को सैनिक राज्य ही बना दिया वहीं अकबर ने अपरिपक्व आयु होने के बावजूद भी अपने राज्य का विस्तार तो किया ही, साथ ही जनता के लाभ के लिए भी कार्य कर जनता को अपना प्रशंसक बना लिया। कहा जाता है कि जब हुमायूँ इधर से उधर भागता फिर रहा था तब 15 अक्टूबर, 1542 ई० को सिंध के अमरकोट नामक के राना 'वीर साल' के महल में हुमायूँ की पत्नी हमीदा बानो की कोख से जलाल उद्-दीन-मोहम्मद अकबर का जन्म हुआ. इस समय उसके पास अपने साथियों को बांटने के लिए एक ~~कुछ~~ कस्तूरी के अतिरिक्त कुछ भी न था। अकबर का बचपन 'अस्करी' के संरक्षण में माहम अन्गा, एवं जीजी की देख-रेख में कंधार में बीता।

1551 ई० में मात्र 9 वर्ष की अवस्था में पहली बार अकबर को गजनी की सुबेदारी सौंपी गई। सिकन्दर सूर से ~~अकबर द्वारा~~ 'सरहिन्द' को छीन लेने के बाद हुमायूँ ने 1555 ई० में उसे अपना 'युवराज' घोषित किया। दिल्ली पर अधिकार करने के बाद हुमायूँ ने अकबर को लाहौर का गवर्नर नियुक्त किया साथ ही तुर्की सेनापति 'बैरम खाँ' को अकबर का संरक्षक नियुक्त किया।

प्रकृति ने अकबर को अधिक दिनों तक पिता का साथ नहीं दे सकी। जिस समय हुमायूँ की मृत्यु हुई उस समय अकबर अपने संरक्षक बैरम खाँ के साथ पंजाब में अफगानों के विरुद्ध व्यस्त था। उसे यह समाचार गुरुदासपुर जिले में 'कलानौर' नामक स्थान पर प्राप्त हुआ। तब बैरम खाँ ने औपचारिक रूप से 14 फरवरी, 1556 ई० को कालानोर में अकबर का राज्याभिषेक करा दिया, यद्यपि इस समय अकबर की आयु मात्र 13 वर्ष 4 माह थी। अतः प्रशासन की वास्तविक बागडोर बैरम खाँ अपने हाथों मे ले लिया।

* अकबर का मात्र 13 वर्ष 4 माह मे भी राज्याभिषेक करवाया दिया गया।

अकबर ही ऐसा प्रथम तैमूर वंशीय राजकुमार था जिसके मस्तिष्क में अखिल भारतीय साम्राज्य स्थापित करने का विचार आया. अकबर की साम्राज्यवादी नीति का मुख्य उद्देश्य प्रसिद्धि और महानता हासिल करना था. यद्यपि प्रसिद्धि ~~और~~ हासिल करना उसका मुख्य उद्देश्य था पर मात्र यही नहीं उसने इतिहास से यह सीखा कि बहुमुखी विकास और जनता की समृद्धि के लिए राजनीतिक अस्थिरता समाप्त होनी चाहिए और परस्पर संघारक युद्ध भी नहीं होने चाहिए. इसलिए कहा जा सकता है कि अकबर की साम्राज्यवादी नीति लोकोपकारी विचारों से प्रेरित थी.

अकबर एक कुशल सैनिक और प्रतिभाशाली सेनापति था। इसके समय का इतिहास ~~निरन्तर~~ सफल युद्धों और राज्य-विस्तार का रहा। अकबर अफगानों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखना चाहता था लेकिन साथ ही साथ वह मुगल साम्राज्य की उत्तर-पश्चिमी सीमा की सुरक्षा भी करना चाहता था. वह मात्र सेना के बल पर ही साम्राज्य विस्तार की नीति के पक्ष में नहीं था. वह सेना के स्थान पर जनता के समर्थन को अपनी शक्ति का आधार बनाने के पक्ष में था. उससे पहले के सभी मुसलमान शासकों ने अपनी प्रजा को दो मुख्य भागों में बाँट रखा था — मुसलमान और हिन्दू। मुसलमान-वर्ग को सिर्फ मुसलमान होने के नाते राज्य की ओर से कुछ विशेष-सुविधाएँ प्राप्त थीं और हिन्दू-वर्ग को सिर्फ हिन्दू होने के कारण कुछ विशेष कठिनाइयों और उत्तरदायित्वों को भुगतना पड़ता था। अकबर ने इस अन्तर को समाप्त कर दिया। अकबर का भारत को राजनीतिक एकता प्रदान करने का प्रयत्न, उसकी समान शासन-व्यवस्था ~~[illegible]~~ अर्थ एवं लगान-व्यवस्था सुरक्षा कर-व्यवस्था सभी को योग्यता के आधार पर राज्य की सेवाओं में उच्चतम स्थान प्राप्त करने की सुविधा, राजपूतों से विवाह सम्बन्ध और समझौते की नीति, सभी धर्मों को समान सुविधा और आदर तथा धार्मिक दृष्टि से एकता लाने का प्रयत्न, फारसी भाषा को राजभाषा बनाना और सभी भाषाओं की प्रगति में सहयोग, विभिन्न ललित-कलाओं की प्रगति तथा उनकी कलाविधियों के समन्वय का प्रयत्न, सांस्कृतिक एकता का प्रयत्न आदि सभी ऐसे कार्य थे जो राष्ट्रीय हित और प्रगति के आधार पर किये गये थे, इस कारण अकबर को एक राष्ट्रीय सम्राट स्वीकार किया जाता है।

राजनीति

एक शासन-प्रबन्धक की दृष्टि से अकबर में मौलिकता एवं व्यावहारिकता दोनों ही थीं। युद्ध में बन्दी बनाये गये व्यक्तियों के परिवार के सदस्यों को दास बनाये जाने की परम्परा को तोड़ते हुए अकबर ने दास प्रथा पर रोक लगा दिया।

शासक के रूप

विजय अभियान

अकबर के विस्तार की आकांक्षाएं दुसरे सम्राज्यवादियों जैसी ही थी। उसने उत्तर भारत में आगरा से गुजरात और फिर आगरा से बंगाल और आसाम की सीमा तक अपने कब्जे में कर लिया। उसके बाद उसने उत्तर पश्चिमी सीमाओं को सुदृढ़ किया और फिर दक्कन की ओर बढ़ा। उसने बाज बहादुर से मालवा जीता (156 और फिर गोंडवाना (1564) गुजरात (1572-3) बिहार/बंगाल (1574-76) हकीम से काबुल (1581) कश्मीर और बलुचिस्तान (1586) सिंध (1591) उड़ीसा (1592) कान्धार (15 खानदेश और अहमदनगर के कुछ क्षेत्र चाँद बीबी से (15 1601) जीते। ~~इन जीतें~~ हुए अकबर के अंतिम दौड़ तक तो मुगल की सीमाएं सिंध, बलुचिस्तान, काबुल और कश्‍ से लेकर हिंदुकुश तक थी। इन सम्राज्य विस्तार से हम अंदाजा लगा सकते हैं कि तत्कालीन समय की सेना कितनी विशाल और शक्तिशाली रही होगी।

तनीति

अकबर ने राजपुतो की शक्ति को पहचानते हुए उन्हें अपने अधीन लाने का कार्य किया। उस ~~इसने~~ वैवाहिक संबन्ध कायम किया ~~व~~ तथा ~~उसके द्वारा~~ उसने हिन्दु रीति रिवाजों को भी अपनाया। इसके साथ ही इसने कई राजपुत राजाओं से लड़ाईयाँ भी लड़ी है। अकबर की शरण में आने वाला पहला राजपुत राजा आ का कछवाहा भारमल था। अकबर ने उसकी पुत्री से विवाह किया। भगवानदास व राजा मानसिंह को उच्च पदों पर नियुक्त किया गया। डूंगरपुर, बाँसवाड़ा और प्रतापगढ़ के राजवंशों ने मुगल अधीनता स्वीकार की थी परंतु वे पृथक रहे। अकबर के इस राजपुत नीति में वैवाहिक संबंध कायम करना अनिवार्य नहीं था और ना ही इसके लिए दबाव ही दिया जाता था। सो अकबर की राजपुत नीति ने अकबर को महान बनने ~~के लिए~~ में एक कदम और आगे बढ़ाया।